International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

"किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षणिक एवं व्यवसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन "

कु. प्रीति उइके[१] कु.रेखा जामोद[२]
[१]सहा. प्राध्यापक गृह विज्ञान विभागए शास. कमला नेहरू कन्या महा.,बालाघाट (म.प्र)
[२]अतिथि विद्वान गृह विज्ञानए शास. कमला नेहरू कन्या महा.,बालाघाट
Corresponding Author- कु. प्रीति उइके
Email- bZesy&pritiuikey102@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7070784

सरांश:-
रूचियां सिखाने के प्रक्रिया को संचालित करने वाली केन्द्रिय शक्ति है रूचियों के अनुसार कार्य करना हमेशा संतुष्ठि प्रदान करता है। वर्तमान समय में किशोर बालक-बालिकाऐं अपनी रूचियों के अनुसार हि विषय एवं व्यवसाय का चयन करने में रूचि रखते है। किशोर कि रूचियां उनकी आयु परिस्थितियों, अनुभवों एवं आवश्यकताओं के आधार पर परिवर्तन होती रहती है अत: प्रस्तुत अध्ययन "किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षणिक रूचियों एवं व्यवसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन" किया तथ्य संकलन के लिए डॉ.एस.पी.कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि एवं व्यवसायिक रूचि मापनी का उपयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर ४० किशोर बालक-बालिकाओं का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि शैक्षिक रूचियों में एग्रीकल्चर, होम साईन्स, कॉमर्स, साईन्स, टेक्नोलॉज में सार्थक अंतर पाया गया। जबकि आर्ट्स में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। किशोर बालकों में एग्रीकल्चर, कॉमर्स एवं साईन्स में रूचि, बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई। जबकि होम साईन्स एवं टेक्नोलॉज में बालिकाओं की रूचि बालकों की अपेक्षा अधिक देखी गई। तथा व्यवसायिक रूचियॉ में सामाजिक, गृहालय, वैज्ञानिक में सार्थक अंतर पाया गया जबकि कलात्मक में कोई अंतर नही पाया गया। व्यवसायिक रूचियों में सामाजिक, गृहालय एवं वैज्ञानिक में बालकों कि रूचि, बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई।

प्रस्तावना:-

मानव ईश्वर की एक अनुपम कृति है। जो निरन्तर विकासशील होने के साथ साथ भौतिकता की पराकाष्ठा को छूने के लिए सदैव तत्पर रहता है। बिना शिक्षा के मनुष्य का सर्वांगिण विकास तथा उसके भीतर छिपे गुणो का पूर्ण रूप से प्रकाशन संभव नहीं है।शिक्षा ही मानव को सामाजिक प्राणी बना कर उसका सर्वांगिण विकास करती है। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है और जैसे-जैसे वह बडा होता है शैक्षिक जीवन में विद्यालय की भूमिका उसके विकास के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है जहॉ उसे पठन पाठन के विभिन्न अवसरों के साथ ही उसके मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक, नैतिक इत्यादि मूल्यों का विकास होता है,जिसके आधार पर उनकी रूचि अधिक स्थायी होती है तथा वह अपनी रूचि के अनुसार भविष्य में व्यवसायिक चयन का अवसर प्राप्त करता है। आजीविका मानव मात्र की मूलभूत आवश्यकता है। आजीविका अथवा रोजगार के लिए व्यक्ति में व्यवसायिक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति क्या और कैसे करेगा, यह बहुत कुछ उसकी रूचियों पर ही आधारित होता हैं। रूचियॉ एक प्रकार की सीखी हुई अभिप्रेरणा स्रोत है।

रूचियॉ हमारे व्यवहार की विशिष्ट प्रवृति है, ये व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंग होती है जो अनेक माध्यमों से सीखी जा सकती है। यह कार्य के लिए एक चालक शक्ति है तथा व्यक्ति के व्यवहार का एक अदभुत पक्ष है जो स्थायी होते हुए भी आयु तथा समय के साथ बदलती रहती है बाल्यावाथा में बालको के अधिगम के लिए रूचियॉ शक्तिशाली अभिप्रेरक का कार्य करती है और अधिक स्थायी होती है इसलिए जिस कार्य में बालक-बालिकाओं की रूचि रहती है उन्हें सीखने के लिए वे अधिक प्रयास करते है। जैसे-जैसे बालक किशोरावस्था की ओर कदम रखते है उनकी रूचियों में परिवर्तन देखा जाता है क्योंकि किशोरावस्था में रूचियॉ व्यवहार के साथ-साथ व्यवसायपरक भी होती है इस अवस्था में व्यवसायिक तथा अव्यवसायिक दोनों प्रकार की रूचियॉ साथ-साथ चलती है।

शिक्षा पद्धति के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन रूचिपूर्ण कौशल के ज्ञान एवं शिक्षा पद्धति को रोजगारन्मुखी बनाने के उद्देश्य के व्यवसायिक शिक्षा को स्कूली पाठयक्रम तथा उच्च शिक्षा पाठयक्रम में स्थान प्रदान किया गया है। व्यवसायिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिरूचि उसकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति, क्षेत्रियता, लिंग तथा विद्यालय, महाविद्यालय के स्तर से प्रभावित होती है फलस्वरूप शिक्षा, व्यवसाय और समायोजन से संबंधित अनेक समस्याऐं उत्पन्न होती है जिनसे

निपटने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक, व्यवसायिक निर्देशन आवश्यक होता है तभी छात्र स्वयं के लिए अपनी रूचियों के अनुसार उपयुक्त व्यवसाय का चुनाव कर उसकी सफलता के लिए प्रयत्न करता है और उन्नति करता है क्योंकि आधुनिक युग में रोजगार की समस्या बहुत जटिल है और वर्तमान में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए विशिष्ट ,शिक्षा और प्रशिक्षण आवश्यक है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

१. किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षणिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
२. किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना:-

१. किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षणिक रूचियों में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
२. किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों में कोई सार्थक अंतर नही होगा।

साहित्य का सर्वेक्षण:-

१,डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा एवं डॉ. समी उर्रमान खान सूरी २०२१:-

ने उत्तर प्रदेश में "माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का सामाजिक विषय में निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन "किया। न्यादर्श के रूप में २०० छात्र एवं २०० छात्राओं को सम्मिलित किया गया। शैक्षिक रूचियों को ज्ञात करने के लिए उपकरण डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र का उपयोग किया गया है। इनके तथ्य विश्लेषण में पाया गया है कि "माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का सामाजिक विषय में निष्पत्ति में सार्थक अंतर है। शहरी विद्यार्थी, ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय में निष्पत्ति में उत्तम है शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय में निष्पत्ति चरों में सार्थक अंतर नही पाया गया।

२.डॉ. सरिता गोस्वामी २०२१:-

ने मेरठ में "मेरठ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन "किया। विभिन्न स्कूलों से १०० छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। तथ्य संकलन के लिए उपकरण डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र का उपयोग किया गया है। तथ्य विश्लेषण में पाया गया। तथ्य विश्लेषण में पाया गया है कि लिंगीय आधार पर माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यवसायिक रूचियों के अधिकांश क्षेत्रों में कोई सार्थक अंतर नही है, केवल व्यवसायिक रूचि के क्षेत्र रचनात्मक (ब्व) में सार्थक अंतर पाया गया।

३.डॉ. भरत कुमार पंडी २०२१:

-ने वर्धा महाराष्ट्र में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यवसायिक अभिवृति पर शोध कार्य किया। जिसके परिणाम में पाया गया है कि गैर सरकारी विद्यालयों में विभिन्न सुविधा उपलब्ध होने के कारण विद्यार्थियों के मानस पटल पर अधिक व्यवसाय चयन की सुविधा रहती है, मनपसन्द सरकारी विद्यालयों में सुविधाओं की कमी रहती है।

शोध विधि:-

निदर्शन का चुनाव:-इस शोध कार्य हेतु बालाघाट जिले के २० किशोर बालक एवं २० बालिकाओं का चयन उद्देश्यानुसार किया गया। इस प्रकार कुल ४० विद्यार्थियों का चयन किया गया। तथ्य संकलन के उपकरण के लिए डॉ.एस.पी.कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि एवं व्यवसायिक रूचि मापनी का उपयोग किया गया।

विश्लेषण तथा विवेचना :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षिक एवं व्यवसायिक रूचि का अध्ययन किया। जिसे ज्ञात करने हेतु प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण टी-परीक्षण की सहायता से किया गया। इसके परिणाम तालिका में इस प्रकार दिए गए है-

तालिका क्रमांक-१ किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षिक रूचियों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-मूल्य-

शैक्षिक रूचियों	लिंग	df	mean	Sd	SE	t-value	Level of significant
एग्रीकल्चर	किशोर बालक	२०	१७.०५	५.५२	१.३०	३.६९	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१०.९५	४.९०	१.०४		
आर्ट्स	किशोर बालक	२०	९.०४	३.८८	.८२८	.०३६	सार्थक नही है
	किशोर बालिकाऐं	२०	९.००	४.१४	.९७६		
होम साइन्स	किशोर बालक	२०	९.८८	२.११	.४९७	३.३४	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१५.८१	७.२४	१.५४		
कॉमर्स	किशोर बालक	२०	१६.४०	५.६१	१.१९	५.०६	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	९.२७	२.२१	.५२		
साइन्स	किशोर बालक	२०	१३.३६	४.१४	.८८४	२.३२	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१०.५१	३.५१	.८२९		
टेक्नोलॉजी	किशोर बालक	२०	९.५२	३.०३	.६४७	७.६१	सार्थक है

	किशोर बालिकाऐं	२०	१८.७७	४.६३	१.०९		

उपर्युक्त तालिका क्रमांक ४.१ से स्पष्ट हैं कि किशोर बालकों के एग्रीकल्चर का मध्यमान १७.०५ एवं बालिकाओं का मध्यमान १०.९५ हैं, और टी-मूल्य ३.६९ हैं तथा कि त्र३८ हैं, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालकों के एग्रीकल्चर में सार्थक अंतर है अतः शून्य परिकल्पना "किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षिक रूचियों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही हैं" को स्वीकार किया जाता हैं प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालकों का एग्रीकल्चर में रूचियॉ , किशोर बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाई गयी।

किशोर बालकों के आर्ट्स का मध्यमान ९.०४ एवं बालिकाओं का मध्यमान ९.०१ हैं, और टी-मूल्य .०३६ हैं तथा कि त्र३८ हैं, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक नही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के आर्ट्स में सार्थक अंतर नही है। प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालक-बालिकाओं के आर्ट्स में रूचियॉ लगभग समान पाई गई।

किशोर बालकों के होम साइन्स का मध्यमान ९.८८ एवं बालिकाओं का मध्यमान १५.८१ हैं, और टी-मूल्य ३.३४ हैं तथा कि त्र३८ हैं, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के होम साइन्स में सार्थक अंतर है प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालिकाओं की होम साइन्स में रूचियॉ, किशोर बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गयी। किशोर बालकों के कॉमर्स का मध्यमान १६.४१ एवं बालिकाओं का मध्यमान ९.२७ हैं, और टी-मूल्य ५.०६ हैं तथा कि त्र३८ हैं,जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के कॉमर्स में सार्थक अंतर है प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालकों का कॉमर्स में रूचियॉ ,किशोर बालिकाओं की अपेक्षा उच्च पाई गयी।

किशोर बालकों के साईन्स का मध्यमान १३.३६ एवं बालिकाओं का मध्यमान १०.५१ हैं, और टी-मूल्य २.३२ हैं तथा कि त्र३८ हैं, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के साईन्स में सार्थक अंतर है प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालक साइन्स में रूचियॉ, किशोर बालिकाओं की अपेक्षा अधिक लेते है। किशोर बालकों के टेक्नोलॉजी का मध्यमान ९.५१ एवं बालिकाओं का मध्यमान १८.७७ हैं, और टी-मूल्य ७.६१ हैं तथा कि त्र३८ हैं, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के टेक्नोलॉजी में सार्थक अंतर है प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता हैं कि किशोर बालकों का टेक्नोलॉजी में रूचियॉ ,किशोर बालिकाओं की अपेक्षा कम है।

ग्रॉफ क्रमांक-१ किशोर बालक-बालिकाओं के शैक्षिक रूचियों

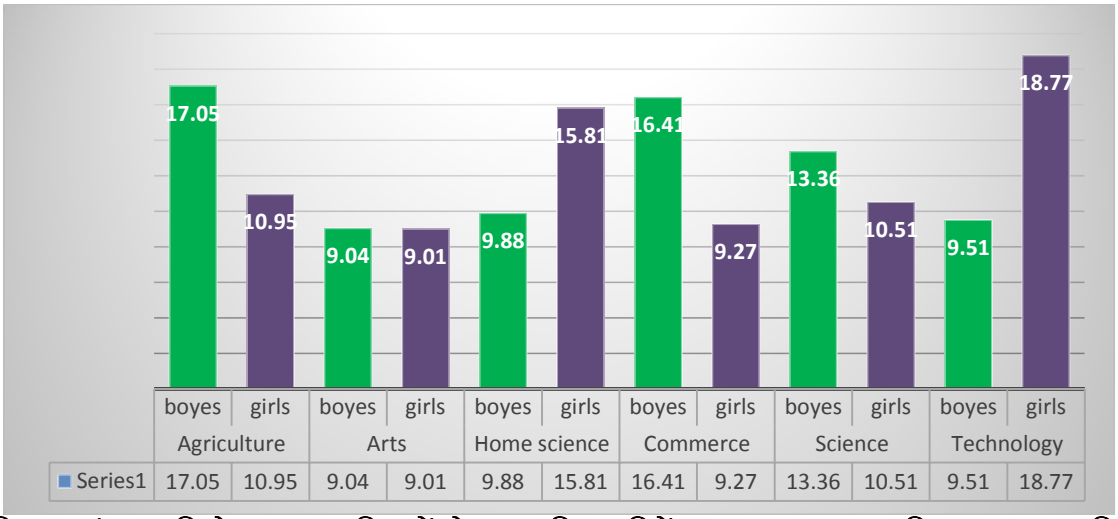

तालिका क्रमांक-२ किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-मूल्य-

व्यवसायिक रूचि	लिंग	df	mean	Sd	SE	t-value	Level of significant
कलात्मक	किशोर बालक	२०	१२.९५	२.३२	.५२०	.३३७	सार्थक नही है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१२.७०	२.३६	.५२८		
सामाजिक	किशोर बालक	२०	१४.८५	३.९३	.८८०	२.३५	सार्थक है

	किशोर बालिकाऐं	२०	११.३१	५.४५	१.२२		
गृहालय	किशोर बालक	२०	१०.०५	२.५४	.५६८	४.५१	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१४.०१	२.९७	.६६४		
वैज्ञानिक	किशोर बालक	२०	१४.३१	२.९०	.६४९	३.७९	सार्थक है
	किशोर बालिकाऐं	२०	१०.४१	३.५६	.७९०		

उपर्युक्त तालिका क्रमांक ४.२ से स्पष्ट है कि किशोर बालकों के कलात्मक रूचि का मध्यमान १२.९५ एवं बालिकाओं का मध्यमान १२.७० है, और टी-मूल्य .३३७ है तथा क ित्र३८ है, जोकि ०.०५/०.०१ स्तर पर सार्थक नही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नही है अतः शून्य परिकल्पना "किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही हैं, को स्वीकार किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों के अर्न्तगत कलात्मक में लगभग समान पाई गई।

किशोर बालकों की सामाजिक रूचियों का मध्यमान १४.८५ एवं बालिकाओं का मध्यमान ११.३१ है, और टी-मूल्य २.३५ है तथा क ित्र३८ है, जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक है जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के सामाजिक रूचियों में सार्थक अंतर है। प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किशोर बालकों की सामाजिक कार्य में रूचि अच्छी पाई गई जबकि बालिकाओं में कम पाई गई। किशोर बालकों के गृहालय में रूचिया का मध्यमान १०.०५ एवं बालिकाओं का मध्यमान १४.०१ है, और टी-मूल्य ४.५१ है तथा क ित्र३८ है,जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं के गृहालय रूचियों में सार्थक अंतर है। प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किशोर बालकों की गृहालय कार्य में रूचि, बालिकाओं की अपेक्षा कम पाई गई।

किशोर बालकों की वैज्ञानिंक रूचियों का मध्यमान १४.३१ एवं बालिकाओं का मध्यमान १०.४१ है, और टी-मूल्य ३.७९ है तथा क ित्र३८ है जोकि ०.०५ स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर बालक-बालिकाओं में वैज्ञानिक रूचियों में सार्थक अंतर है। प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किशोर बालकों की वैज्ञानिक कार्य में रूचि, बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई।

ग्रॉफ क्रमांक-२ किशोर बालक-बालिकाओं के व्यवसायिक रूचियों

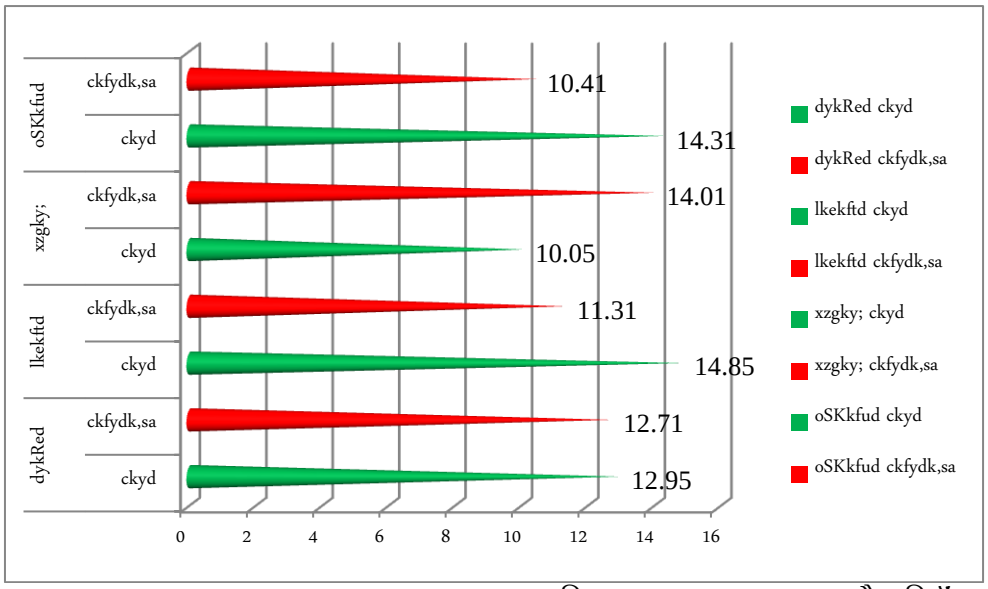

निष्कर्ष-

रुचि से जिज्ञासा उत्पन्न होती है तथा जिज्ञासा से ज्ञान प्राप्ति के हर सम्भव प्रयास किये जाते है तथा परिणामस्वरूप ज्ञान प्राप्त भी कर लिया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा के लिए रुचि आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।रूचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने, उसे पसन्द करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है। जिन कार्यों में व्यक्ति की रूचि होती है वह उसमें अधिक सफलता प्राप्त करता है।रुचियाँ जन्मजात भी हो सकती हैं तथा अर्जित भी हो सकती है। अवलोकन के द्वारा व्यक्ति की प्रदर्शित रूचियों का मापन किया जाता है।इन विधियों में व्यक्ति उन्हीं में अपनी रुचि प्रदर्शित करता है जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती है।समाज की परिस्थितियों, सुविधाओं, स्वीकृतियों, मान्यताओं आदि के परिवर्तन से किशोरों की रुचियाँ परिवर्तित हो जाती हैं। रुचियाँ स्वरूप से परिवर्तनशील होती हैं।किशोर को उनकी अभिरुचि के

अनुसार विषयों के चयन में सहायता प्रदान की जाय, जिससे शिक्षा और व्यवसाय से सम्बन्धित अपेक्षाओं का समन्वय हो सके। इसी कारण विद्यार्थियों को व्यवसायिक निर्देशन देकर उनकी रुचियों, अभिरुचियों, योग्यताओं आदि से छात्र छात्राओं को परिचित कराया जाता है,ताकि इसी के आधार पर किशोर भावी व्यवसाय का चयन कर सकें और अपनी योग्यतओं, रुचियों, अभिरुचियों आदि का विकास कर सकें।इसी के द्वारा वह किसी व्यवसाय में लगकर संतोषजनक व्यवसाय प्राप्त कर सकते हैं।

सुझाव:-

१. किशोर बालक-बालिकाओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन विकसित करना चाहिए।
२. शिक्षकों को कोई भी विषय पढ़ाते समय बालकों के दृष्टिकोण से परिचित होना आवश्यक है।
३. किशोरों की कठिनाई का निवारण सरलता से करने का प्रयत्न करें।
४. बालकों के ध्यान व रुचि केन्द्रित न होने पर किसी अन्य मनोरंजन खेल द्वारा ध्यान आकर्षित करना चाहिए।
५. शिक्षण के साथ-साथ बच्चों को उनके परिवेश एवं नई-नई चीजों की भी जानकारी दें।
६. किशोरों की सीखने की स्थिति के लिए उचित वातावरण का निर्माण करना चाहिए।
७. रुचि के महत्व के साथ उसके विगत अनुभवों का प्रसंग देना चाहिए।
८. किशोर को अनुभवों के आधार पर व्यवसाय का चयन करना चाहिए।
९. कठिन और नीरस विषय को सरल एवं रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।
१०. छात्र शिक्षाक तथा छात्र-छात्र के बीच अंत संबंधों को प्रोत्याहित किया जाना चाहिए।
११. रुचि जागृत करने व ज्ञान वृद्धि के लिए बच्चों को भ्रमण पर भी ले जाना चाहिए।
१२. किशोरों को आयु के अनुसार रुचिकर कार्य कराने से शिक्षण प्रभावी बनता है।
१३. बच्चों को समय-समय पर पुरस्कारों एवं प्रमाण पत्रों द्वारा प्रोत्साहित करना।
१४. किशोर समाज के प्रति अपना दायित्व समझें और एक बेहतर विश्व के निर्माण के लिए कार्य करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1- रामजी श्रीवास्तव २००५- आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, प्रकाशक- मोतिलाल बनारसीदास बेंगलोर,.।

2- *डॉ. सरिता गोस्वामी २०२१:- "मेरठ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, International journal of Applied Research, Page no.13-17,ISSN 2394-5869,(www.allreserchjournal.com).*

3- *डॉ.योगेश्वर २०२१:- "माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का समाजिक विषय में निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, National journal of multidisciplinary Research and Development ,page no.16-18, Volume-2, ISSN-2,2021(www.nationaljournal.com).*

4- *डॉ. भरत कुमार पंडा २०२१:- "सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृति का अध्ययन" International journal of creative Research Thoughts,volume-9,ISSN-9.(www.ijcrt.org).*

5- *डॉ.डी. एन. श्रीवास्तव एवं डॉ.प्रीति वर्मा २०१९-बाल मनोविज्ञान बाल विकास, प्रकाशक-श्री विनोद पुस्तक मंदिर.*

6- *www.scotbuzz.org.*

7- *www.mycoaching.com*

8- *www.shodhganga.*

9- *Wikipedia.org*